28

सीनै पहाड़ और सिय्योन पहाड़

(12:18-29)

हम उस वचन यानी सीनै पहाड़ को सिय्योन पहाड़ से अलग करने वाली आयतों पर आ गए हैं जिसे इब्रानियों की पुस्तक का ''बड़ा चरम'' कहा जाता है।[1] 12:18-29 में हम फिर से पुस्तक में पहले आए कुछ ढंगों, तर्कों और ताड़नाओं को देखते हैं। उदाहरण के लिए इब्रानियों की पूरी पुस्तक में लेखक ने पुराने नियम का बार बार इस्तेमाल किया। हमारे वर्तमान वचन पाठ में उत्पत्ति, निर्गमन, व्यवस्थाविवरण और हाग्गै में से पुराने नियम की कहानियां, पुराने नियम की शब्दावली और पुराने नियम के उद्धरण हैं। चार्ल्स हॉज से सुझाव दिया है कि हमें ''पवित्र शास्त्र में तब विशेष ध्यान देना चाहिए जब परमेश्वर स्वयं को उद्धृत करता है।''[2]

इब्रानियों की पुस्तक की एक और विशेष बात यह है कि नई वाचा हर प्रकार से *उत्तम* है। 12:24 में हम ''यीशु के, इस नई वाचा के मध्यस्थ'' होने और उसके ''छिड़काव के लहू'' की बात पढ़ते हैं, ''जो हाबिल के लहू से *उत्तम* बातें करता है।'' तात्पर्य यह है कि यीशु एक उत्तम मध्यस्थ है और उसका लहू उत्तम बलिदान है। पुरानी वाचा का लहू (पशुओं का लहू) लोगों को ''सिद्ध'' नहीं बनाया पाया, परन्तु नई वाचा का लहू (यीशु का लहू) बना सकता है (आयत 23)। पत्री के इस भाग में मुख्य बल इस बात पर है कि हमारे पास *एक उत्तम वाचा* है। सीनै पहाड़ पर पुरानी वाचा की आकृति है जबकि सिय्योन पहाड़ नई वाचा की आकृति है। इस पाठ में हम इन दोनों पहाड़ों के बीच कुछ अन्तरों को देखेंगे। फिर हम वचन के अन्त में दी गई चुनौतियों को देखेंगे।

भिन्नताएं (12:18-29)

लेखक ने इस बात पर बल दिया कि उसके पाठक सीनै पहाड़ ''के पास'' नहीं (आयत 18) बल्कि ''सिय्योन पहाड़ के पास आए'' थे (आयत 22)। मनपरिवर्तन की प्रक्रिया की बात करने का यह लाक्षणिक ढंग है। ''सिय्योन पहाड़ के पास आए'' पाठकों के मसीही बनने की ओर संकेत करता है।

सीनै पहाड़

मूल पाठक यहूदी धर्म में वापस लौट जाने का विचार कर रहे थे। यहूदियों के लिए अपनी जाति के इतिहास में सीनै पहाड़ पर व्यवस्था के दिए जाने से बढ़कर शानदार और रोमांचकारी घटना कोई नहीं थी। आयतें 18 से 21 उस भयभीत करने वाली घटना का स्मरण दिलाती हैं (देखें निर्गमन 19; 20:19; व्यवस्थाविवरण 4:11, 12; 5:23; 9:19)। उस अवसर के लिए कौन से शब्द सही हैं ?

(1) *शारीरिक/सांसारिक।* सीनै पहाड़ एक शारीरिक पहाड़ अर्थात वह चोटी थी जिसे

''छुआ'' जा सकता था (आयत 18; देखें आयत 20)। लोगों को चेतावनी देने के समय मूसा ''पृथ्वी पर'' था (आयत 25)।

(2) *अद्वितीय।* वैसे तो उस पहाड़ को छुआ जा सकता था, पर उस समय इसे छूने की आज्ञा *नहीं* थी (आयत 20)। लोग पहाड़ ''के पास आए'' थे पर वे इसके इतना पास नहीं थे! और पास आने का अर्थ मृत्यु था!

(3) *भय उत्पन्न करने वाला।* शक्ति के भयदायक प्रदर्शन पर ध्यान दीजिए (आयतें 18, 19, 21)। उन आतंकित दर्शकों की बातें सुनें (आयतें 19, 20)। यहां तक कि मूसा ने कहा, ''मैं बहुत डरता और कांपता हूं'' (आयत 21ख)।

(4) *अस्थाई।* यहोवा के स्वर से उस अवसर पर पृथ्वी डोल गई (आयत 26)। इब्रानियों की पुस्तक के लिखे जाने के समय उसके स्वर से (एक अर्थ में) *सब कुछ* डोल रहा था (आयत 26); शारीरिक या सांसारिक चीज़ें (विशेषकर, वे संस्थान और संस्थाएं यहूदियों के लिए बहुत कीमती थीं) हटाए जाने की प्रक्रिया में थीं।

सीनै पहाड़ की विशेषताओं (पुरानी वाचा) पर फिर से ध्यान दें। यह वचन इस बात पर ज़ोर देता है कि इब्रानी मसीही लोग ऐसी वाचा ''के पास'' *नहीं* आए थे। उनकी निष्ठा वहां नहीं होनी चाहिए थी।

सिय्योन पहाड़[3]

हम सिय्योन पहाड़ का वर्णन कैसे करते हैं? सीनै पहाड़ के विपरीत, सिय्योन पहाड़ को इन शब्दों को दोहराया जा सकता है:

(1) *आत्मिक/स्वर्गीय।* मसीही लोगों के रूप में हम ''... नगर के पास आए'' हैं (आयत 22)। किस नगर के पास? ''नगर जिसका रचने वाला और बनाने वाला परमेश्वर है'' (11:10)। हम ''*स्वर्गीय* यरूशमेल'' के पास आए हैं (12:22)। प्रभु की कलीसिया के लोगों के रूप में हमारे नाम ''स्वर्ग में लिखे हुए'' हैं (आयत 23)।

(2) *द्वितीय।* हम ''पमेश्वर और यीशु के पास'' आए हैं (आयतें 23, 24)। धर्मी मुर्दों की आत्माएं परमेश्वर की उपस्थिति में हैं (आयत 23)। बेशक हमें परमेश्वर के लिए अत्यधिक सम्मान दिखाते रहना आवश्यक है (आयतें 28, 29), परन्तु नई वाचा हमें उसके ''निकट आने'' को प्रोत्साहित करती है (याकूब 4:8; देखें इब्रानियों 7:19)।

(3) *भरोसा दिलाने वाला।* डोलने वाले, हिलने वाले, धुएं वाले पहाड़ के पास आने के बजाय हम उसके पास आए हैं जिसकी हर बात का वर्णन 12:22-24 में मिलता है:

> पर तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम के पास। और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और कलीसिया जिसके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं; और अब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं। और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु, और छिड़काव के उस लोहू के पास हो, जो हाबिल के लोहू से उत्तम बातें कहता है।

''कितना भंयकर!'' पुकारने के बजाय हम बोल उठते हैं, ''कितना अद्‌भुत!''

(4) *अनन्त/स्थाई।* ''हम इस राज्य को पाते हैं जो हिलने का नहीं'' (आयत 28क)। यह राज्य/कलीसिया के लिए उपयुक्त भाषा है (देखें दानिय्येल 2:44)। ''अधोलोक के फाटक'' इस पर प्रबल नहीं आ सकते। (मत्ती 16:18)। संदर्भ में यह शब्दावली सम्भवतया स्वर्ग में अनन्त राज्य का विशेष हवाला है! एक अतिरिक्त अर्थ इस तथ्य में देखा जा सकता है कि इब्रानी मसीही लोगों को एक राज्य मिल रहा था जिसे हिलाया नहीं जा सकता था। उन्हें अपने विश्वास में न तो डोलना चाहिए था न यीशु के प्रति अपनी निष्ठा से फिरना चाहिए था!

फिर से सिय्योन पहाड़ की विशेषताओं को देखें। पाठकों को बताया गया था ''तुम *इस*'के पास आए' हो।'' परमेश्वर की आशिषें यहीं पर हैं! यही पर उनकी निष्ठा होनी चाहिए थी और यहीं पर हमारी निष्ठा है!

चुनौतियां (12:24, 25, 28, 29)

सिय्योन पहाड़ सीनै पहाड़ से श्रेष्ठ था इसलिए नई वाचा पुरानी वाचा से उत्तम थी और मसीहियत यहूदी धर्म से श्रेष्ठ थी। आत्मा की प्रेरणा पाया लेखक अपने पाठकों को चुनौती देते अर्थात उन निष्कर्षों पर आधारित ताड़नाएं देने को तैयार था।

उसकी सुनो और उसकी आज्ञा मानो (12:24, 25, 29)

हम ''उससे इन्कार करते हैं जो ... स्वर्ग से बात कर रहा है''[4] (आयत 25)। जब हम उसकी सुनने या उसकी आज्ञा मानने में नाकाम होते हैं। मूसा की (जो छोटा था) सुनने और आज्ञा मानने से इनकार करने वाले इस्राएलियों को दण्डित किया गया था। उससे कहीं अधिक दण्ड उन्हें मिलेगा जो प्रभु की (जो बड़ा है) सुनकर मानते नहीं हैं! ''नई वाचा'' परमेश्वर की ओर से मिली है। यदि हम इसे नकारते हैं तो हम परमेश्वर के क्रोध को जो ''भस्म करने वाली आग'' है (आयत 29) भड़काते हैं!

उसे धन्यवाद दें और उसकी आराधना करें (12:28)

उस सब पर जो कुछ परमेश्वर ने हमारे लिए किया है (हमें न हिलने वाला राज्य देने सहित) हमें धन्यवाद से भर जाना चाहिए। यह आभार आराधना अर्थात ''भक्ति और भय'' से की गई आराधना से दिखाया जाना चाहिए। (आयत 28)।

सिखाने वाले के लिए नोट्स

नीचे सीनै पहाड़ और सिय्योन पहाड़ की तुलना करते हुए एक सरल चार्ट दिया गया है आप इसे बोर्ड या बड़े कागज या गत्ते पर उतारकर इस पाठ को बताते हुए इस्तेमाल कर सकते हैं।

सीनै पहाड़	सिय्योन पहाड़
शारीरिक	सांसारिक
अद्वितीय	द्वितीय
भय उत्पन्न करने वाला	भरोसा दिलाने वाला
अस्थाई	अनन्त/स्थाई

टिप्पणियां

[1]नील आर. लाइटफुट, 26 अक्टूबर 1985 को फोर्ट वर्थ, टैक्सस में इब्रानियों पर एसीयू एक्सटेंशन क्लास। [2]चार्ल्स बी. हॉज, जूनि., *दि एगनी एंड ग्लोरी ऑफ़ द क्रॉस* (सरसी, आरकैंसा: ट्रुथ फ़ॉर टुडे वर्ल्ड मिशन स्कूल, 2007), 134. [3]''सिय्योन पहाड़'' या ''सिय्योन'' यरूशलेम नगर के लिए यहां पर प्रतीकात्मक अर्थ में इस्तेमाल किया गया नाम (देखें 1 राजाओं 8:1; 2 इतिहास 5:2)। [4]यह परमेश्वर के लिए था, परन्तु हमारे वचन पाठ की अन्तिम आयतें परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र में कोई अन्तर नहीं करती।